डा. जे.एस. ग्रेवाल

निदेशक (मई, 1989 से जुलाई, 1994 तक)

(नई तकनीकों को उन्नत करना, बुनियादी ढांचे का आधुनिकीकरण तथा अनुसंधान एवं विकास का समेकन किया)

जन्म एवं शिक्षा

डा. जगदेव सिंह ग्रेवाल का जन्म 7 जुलाई, 1934 को लुधियाना (पंजाब) में हुआ था। सन् 1956 में आपने मृदा विज्ञान में एम.एस.सी. तथा सन् 1964 में पंजाब विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की। आपने सी.एस.आई.आर.ओ. प्रयोगशालाओं एवं ब्रिस्बेन, एडिलेड, मेलबर्न, कैनबरा और सिडनी के विश्वविद्यालयों से फसल उत्पादन, मृदा उर्वरता एवं आधुनिक उपकरण पर उन्नत प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

व्यावसायिक उपलब्धियां

डा. ग्रेवाल ने अपने व्यावसायिक जीवन की शुरूआत मई, 1957 में, कृषि विभाग, हिमाचल प्रदेश/खाद्य एवं कृषि मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली के अन्तर्गत अनुसंधान सहायक के रूप में की थी। अक्तूबर, 1958 में उन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अनुसंधान योजना, कृषि कॉलेज, लुधियाना, पंजाब, में वरिष्ठ अनुसंधान अध्येता के रूप में पदभार ग्रहण किया। सन् 1961 से 1968 के दौरान उन्होंने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, पंजाब में सहायक मृदा रसायनज्ञ के रूप में अपनी सेवाएं दी। अगस्त, 1968 से जून,1972 तक उन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में मृदा वैज्ञानिक के रूप में कार्य किया। सन् 1972 में उन्हेंने केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला में प्रधान वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, फसल एवं मृदा विज्ञान विभाग में पदभार ग्रहण किया। 12 अप्रैल, 1989 को वह केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक बने तथा 31 जुलाई, 1994 को उसी पद से सेवानिवृत्त हुए। सन् 1989 में डा. ग्रेवाल ने "आलू उत्पादन की आधुनिक पद्धतियां" पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा "आलू की पिछेता झुलसा बीमारी" पर "सार्क" प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, सन् 1992 एवं 1993 में सत्य आलू बीज तकनीक पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

तथा सन् 1993 में जैव प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित करवाए, इसके अतिरिक्त समय-समय पर क्षेत्र पदाधिकारियों एवं किसानों के लिए नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित कराये।

सम्मान

डा. ग्रेवाल भारतीय आलू संघ (आई.पी.ए.) के आजीवन सदस्य हैं, जिसमें सन् 1978 में वह आई.पी.ए. के सचिव, सन् 1979 एवं 1980 में उपाध्यक्ष, तथा सन् 1983 से 1986 तक तथा 1989 से 1992 तक उसके अध्यक्ष रहे। आप भारतीय मृदा विज्ञान संस्था के भी सदस्य रहे हैं। डा. ग्रेवाल ने सन् 1989 एवं 1990 में भारतीय आलू संघ के सहयोग से आलू पर दो राष्ट्रीय संगोष्ठियां आयोजित करायी।

डा. ग्रेवाल मृदा विज्ञान के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, के वैज्ञानिक पैनल के सदस्य, उर्वरक सलाहकार समिति हिमाचल प्रदेश, के सदस्य, भारतीय आलू विकास परिषद, के सदस्य, हिमाचल प्रदेश बीज आलू विकास बोर्ड एवं भारतीय उर्वरक संघ के संकाय सदस्य हैं। सन् 1990 में वह यू.एन.डी.पी. तथा जड़ एवं कंद फसल प्रौद्योगिकी परियोजना के लिए गठित मानव संसाधन विकास की सलाहकार समिति के सदस्य भी थे। सन् 1981 में उन्हें भारतीय उर्वरक संघ द्वारा, सन् 1983 में पी.पी.आई.सी-एफ.ए.आई. द्वारा एवं सन् 1992 में भारतीय पोटाश अनुसंधान संस्थान के बैस्ट पेपर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। कृषि में फोस्फेट पर उनके कार्य को सन् 1982 में उत्कृष्ट शोध पत्र को अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिकों के निर्णायक मंडल द्वारा उच्च वैज्ञानिक स्तरीय इम्फोस एग्रोनोमी अवार्ड के लिए आंका गया था। सन् 1983 में उन्हें ब्रूसेल्स, बैल्जियम में आयोजित फास्फोरस यौगिकों की अन्तर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भाग लेने के लिए बुलाया गया था।